Pedagogy Insights
An International Peer reviewed Journal of Multidisciplinary research
Vol. 1, Issue. 2, July-September 2026, 86–93
ISSN: 3139-843X
DOI:

बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परम्पराएं एवं जीवन शैली पर अध्ययन

[1]*मनीषा, [2]प्रो० (डॉ०) मनीषा राव

[1]शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभागए वीरांगना रानी अवन्तीबाई लोधी महिला महाविद्यालय, बरेलीए एम०जे०पी०आर०यू०, बरेली।
[2]गृह विज्ञान विभागए वीरांगना रानी अवन्तीबाई लोधी महिला महाविद्यालय, बरेलीए एम०जे०पी०आर०यू०, बरेली।
manishagautam120597@gmail.com

सारांश :–

भारत की जनजातीय संस्कृति अपनी विविधता, प्राचीनता तथा विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना के कारण विश्वभर में विशेष महत्व रखती है। बंजारा जनजाति भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख घुमंतू एवं अर्ध–घुमंतू जनजातियों में से एक है, जिसने ऐतिहासिक रूप से व्यापार, परिवहन तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समय के साथ स्थायी निवास, आधुनिक शिक्षा, नगरीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभाव ने बंजारा समुदाय की पारंपरिक जीवन शैली एवं सांस्कृतिक विरासत में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। ऐसे परदृश्य में बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं एवं जीवन शैली का समग्र अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक संगठन, पारिवारिक संरचना, धार्मिक विश्वासों, लोककला, लोकगीत, लोकनृत्य, वेशभूषा, आभूषण, भाषा, आर्थिक गतिविधियों तथा पारंपरिक जीवन शैली का ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। साथ ही, यह अध्ययन आधुनिकता, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, सरकारी जनजातीय विकास योजनाओं तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के कारण इस समुदाय में हो रहे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है।

अध्ययन गुणात्मक (फनंसपजंजपअम) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें ऐतिहासिक,वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। शोध में प्राथमिक स्त्रोतों (मैदानी अध्ययन, साक्षात्कार एवं अवलोकन) तथा द्वितीयक स्रोतों (पुस्तकें,शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्टें, जनगणना आँकड़े एवं मानवशास्त्रीय अध्ययन) का समन्वित उपयोग किया गया है। उपलब्ध साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से बंजारा समाज की सांस्कृतिक निरंतरता तथा परिवर्तनशीलता दोनों का परीक्षण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बंजारा समुदाय ने अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को लोकपरंपराओं, सामुदायिक संगठन तथा सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से आज भी काफी हद तक सुरक्षित रखा है, यद्यपि आधुनिक आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों के कारण पारंपरिक व्यवसाय, भाषा, वेशभूषा तथा लोककलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। नई पीढ़ी में शिक्षा एवं रोजगार के नए अवसरों ने सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया है, परन्तु इसके साथ सांस्कृतिक क्षरण की चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि बंजारा जनजाति की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए समुदाय–आधारित प्रयास, सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण, मातृभाषा संरक्षण, लोककलाओं के संवर्धन तथा जनजातीय विकास नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की आश्यकता है। यह शोध जनजातीय अध्ययन, सांस्कृतिक मानवशास्त्र तथा भारतीय सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में उपयोगी योगदान प्रदान करता है तथा भविष्य के अनुसंधानों के लिए एक आधारभूत संदर्भ उपलब्ध कराता है।

मुख्य शब्द: बंजारा जनजातिय, सांस्कृतिक परंपराएँ, जीवन शौली, लोकसंस्कृति, लोककला, घुमंतू समुदाय, सांस्कृतिक परिवर्तन, जनजातीय अध्ययन, सांस्कृतिक संरक्षण, मानवशास्त्र।

ARTICLE HISTORY

Received: 30 July 2026**; Accepted:** 30 August 2026**; Published:** 20 September 2026

CITATION

मनीषा., बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परम्पराएं एवं जीवन शैली पर अध्ययन, *Pedagogy Insights*, 1(2), 86–93.
DOI: https://doi.org/ 10.5281/

COPYRIGHT: © 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ISSN: 3139-843X

1. प्रस्तावना

भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है, जहाँ भाषा, धर्म, संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली की असंख्य अभिव्यक्तियाँ एक साथ विकसित हुई हैं। इस सांस्कृतिक विविधता में जनजातीय समुदायों का विशेष स्थान है। भारतीय जनजातियाँ न केवल देश की सांस्कृतिक विरासत की संवाहक हैं, बल्कि वे प्रकृति, पर्यावरण, सामुदायिक जीवन तथा पारंपरिक ज्ञान की महत्वपूर्ण संरक्षक भी हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366(25) तथा अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजातियों को विशेष संवैधानिक संरक्षण प्रदान किया गया है, जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

भारत में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियों में बंजारा जनजाति एक महत्वपूर्ण समुदाय है, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में लम्बाड़ी (स्उइंकप ध् स्उइंदप), गोर, गोरमाटी, सुगाली, लबाना तथा बंजारा आदि नामों से जाना जाता है। ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय एक घुमंतू व्यापारी एवं परिवहनकर्ता (छवउंकपब ज्तंकपदह ब्वउउनदपजल) के रूप में प्रसिद्ध रहा है। आधुनिक परिवहन साधनों के विकास से पूर्व बंजारा समुदाय बैलों के कारवाँ के माध्यम से नमक, अनाज, कपड़ा, मसाले तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का दूर–दराज़ क्षेत्रों तक परिवहन करता था। इस कारण भारतीय आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में इस समुदाय का विशिष्ट योगदान माना जाता है।

इतिहासकारों और मानवशास्त्रियों ने बंजारा समुदाय की उत्पत्ति तथा विकास के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। जी. एस. घुर्ये (ळण्ैण ळीनतलमए 1963) ने भारतीय जनजातियों को भारतीय समाज की व्यापक संरचना का अभिन्न अंग माना तथा उनके सांस्कृतिक परिवर्तन को सामाजिक समन्वय की प्रकिया से जोड़ा। वेरियर एल्विन (टमततपमत म्सूपदए 1943य 1964) ने जनजातीय जीवन के अध्ययन में उनकी सांस्कृतिक स्वायत्तता, लोकपरंपराओं तथा पारंपरिक ज्ञान को विशेष महत्व दिया और यह प्रतिपादित किया कि विकास की प्रकिया जनजातीय सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के साथ आगे बढ़नी चाहिए। इसी प्रकार के. एस. सिंह (ज्ञण्ैण्ैपदहीए च्मवचसम व िप्दकपं च्तवरमबज) ने बंजारा समुदाय की भाषा, सामाजिक संगठन, आर्थिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक विविधताओं का विस्तृत मानवशास्त्रीय विवरण प्रस्तुत किया है। एल. पी. विद्यार्थी एवं बी. के. राय ने भारतीय जनजातीय समाज के अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि जनजातीय संस्कृति स्थिर नहीं होती, बल्कि बदलती सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के साथ निरंतर रूपांतरित होती रहती है।

बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उसकी विशिष्ट वेशभूषा, रंग–बिरंगे परिधान, चाँदी के आभूषण, लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक लोककथाएँ, सामुदायिक रीति–रिवाज, धार्मिक आस्थाएँ तथा सामूहिक जीवन पद्धति में परिलक्षित होती है। बंजारा महिलाओं की पारंपरिक कढ़ाई (स्उइंदप म्उइतवपकमतल) भारतीय लोककला की एक विशिष्ट पहचान है, जिसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त हुई है। इसी प्रकार इनके लोकगीत एवं लोकनृत्य सामाजिक एकता, ऐतिहासिक स्मृति तथा सांस्कृतिक निरंतरता के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

वर्तमान समय में नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, आधुनिक शिक्षा, संचार क्रांति तथा बाजारवादी अर्थव्यवस्था के प्रभाव ने बंजारा समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक व्यवसायों का स्थान आधुनिक रोजगारों ने लेना प्रारंभ किया है। युवा पीढ़ी एवं शिक्षा शहरी जीवन की ओर अग्रसर हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक भाषा, लोककला, वेशभूषा तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की चुनौती सामने आई है। दूसरी ओर शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीतिक सहभागिता तथा आर्थिक अवसरों में वृद्धि ने

समुदाय के सामाजिक सशक्तीकरण को भी प्रोत्साहित किया है। अतः यह आवश्यक है कि इन दोनों प्रकियाओं सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक परिवर्तन का संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए।

यह अध्ययन बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं एवं जीवन शैली का ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इसमें समुदाय की उत्पत्ति, ऐतिहासिक विकास, सामाजिक संगठन, पारिवारिक व्यवस्था, विवाह एवं पारिवारिक परंपराएँ, धार्मिक विश्वास, लोककला, लोकगीत, लोकनृत्य, भाषा, वेशभूषा, आभूषण, पारंपरिक व्यवसाय तथा समकालीन जीवन शैली का समग्र अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, सरकारी जनजातीय विकास कार्यक्रमों, शिक्षा, वैश्वीकरण तथा आधुनिक तकनीक के प्रभावों का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।

यह शोध केवल सांस्कृतिक विवरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इस प्रश्न का भी उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में बंजारा समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान को किस प्रकार संरक्षित रखे हुए है तथा किन क्षेत्रों में परिवर्तन अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह अध्ययन जनजातीय संस्कृति के संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण तथा समावेशी विकास की नीतियों के निर्माण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। साथ ही, यह शोध भारतीय जनजातीय अध्ययन, सांस्कृतिक मानवशास्त्र, सामाजिक इतिहास एवं लोकसंस्कृति के क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास करता है।

इस प्रकार, ''बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ एवं जीवन शैली पर अध्ययन'' विषय न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक बहुलता, जनजातीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक संरक्षण की समकालीन चुनौतियों को समझने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

बंजारा जाति का ऐतिहासिक परिचय, उत्पत्ति के सिद्धान्त, भौगोलिक विवरण और सामाजिक संगठन :–

बंजारा जनजाति भारत के प्रमुख घुमंतू एवं अर्ध–घुमंतू समुदायों में से एक है, जिसका ऐतिहासिक विकास भारतीय उपमहाद्वीप की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना से घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहा है। प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में यह समुदाय मुख्यतः लंबी दूरी के व्यापार तथा परिवहन कार्यों से संबद्ध था और बैलों के विशाल कारवाँ (ठनससवबा ब्तंअंदे) के माध्यम से नमक, अनाज, घी, कपड़ा, मसाले तथा सैन्य रसद जैसी आवश्यक वस्तुओं का विभिन्न राज्यों एवं साम्राज्यों तक परिवहन करता था। मुगलकाल एवं मराठा शासन में बंजारों का आर्थिक महत्त्व अत्यधिक था, जबकि ब्रिटिश शासनकाल में रेलवे, आधुनिक परिवहन व्यवस्था तथा औपनिवेशिक

वन एवं राजस्व नीतियों के कारण इनके पारंपरिक व्यवसाय में तीव्र गिरावट आई, जिससे इनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए (ळीनतलम, 1963य म्सूपदए 1964)। बंजारा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के बीच एकमत नहीं है। एक मत के अनुसार इनकी उत्पत्ति राजस्थान के राजपूत समुदायों से हुई, जिन्होंने मध्यकालीन राजनीतिक संघर्षों के बाद घुमंतू व्यापार को अपनी आजीविका बनाया, दूसरा मत इन्हें प्राचीन भारतीय वणिक परंपरा का उत्तराधिकारी मानता है, जबकि मानवशास्त्रीय अध्ययनों में इन्हें बहु–जातीय एवं बहु–क्षेत्रीय समुदाय के रूप में देखा गया है, जो समय के साथ विभिन्न स्थानीय समूहों के सम्मिलन से विकसित हुआ (त्नेमसस – भ्पतंसंस, 1916य ैपदही, 1992)। वर्तमान में बंजारा समुदाय राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र,

कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा अन्य अनेक राज्यों में निवास करता है, जहाँ इसे विभिन्न नामों—जैसे लम्बाड़ी (स्उइंकप ६ स्उइंदप), लबाना, सुगाली, गोर एवं गोरमाटी—से जाना जाता है। विभिन्न राज्यों में इसकी संवैधानिक स्थिति भी भिन्न है, कहीं इसे अनुसूचित जनजाति, कहीं अनुसूचित जाति तथा कहीं अन्य पिछड़ा वर्ग के रूप में अधिसूचित किया गया है, जो इसकी ऐतिहासिक एवं क्षेत्रीय विविधता को दर्शाता है (ब्मदेने व िप्दकपंए 2011य डपदपेजतल व िज्तपइंस ।ििंपतेए ळवअमतदउमदज व िप्दकपं)। सामाजिक संगठन की दृष्टि से बंजारा समाज पितृसत्तात्मक (च्जतपंतबींस) एवं पितृवंशीय (च्जतपसपदमंस) व्यवस्था पर आधारित है। परिवार सामाजिक जीवन की मूल इकाई है, जबकि गोत्र (ब्संद) व्यवस्था विवाह संबंधों एवं सामाजिक अनुशासन का प्रमुख आधार मानी जाती है। समुदाय में बहिर्गोत्रीय विवाह (म्गवहंउल) का प्रचलन है तथा विवाह, जन्म, मृत्यु एवं अन्य सामाजिक संस्कार सामुदायिक रीति—रिवाजों के अनुसार संपन्न किए जाते हैं। पारंपरिक रूप से ग्राम अथवा 'टांडा' (ज्ंदकं) बंजारा जीवन का प्रमुख सामाजिक एवं प्रशासनिक केंद्र होता है, जहाँ नायक (मुखिया) एवं जातीय पंचायत स्थानीय विवादों के समाधान, सामाजिक नियंत्रण तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि शिक्षा, नगरीकरण, संवैधानिक अधिकारों तथा आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्थाओं के प्रभाव से इन संस्थाओं के स्वरूप में परिवर्तन आया है, फिर भी सामुदायिक एकता, पारस्परिक सहयोग तथा सांस्कृतिक निरंतरता आज भी बंजारा समाज की विशिष्ट पहचान बने हुए हैं (टपकलंतजीप – त्पए 1976य डंरनउकंतए 1961य ैपदही, 1992).

बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ :—

बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ भारतीय जनजातीय संस्कृति की समृद्ध एवं बहुआयामी विरासत का महत्वपूर्ण अंग हैं। यह समुदाय अपनी विशिष्ट लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं तथा लोककलाओं के कारण भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में विशिष्ट स्थान रखता है। ऐतिहासिक रूप से बंजारा समुदाय घुमंतू व्यापारिक जीवन से जुड़ा रहा है, जिसके कारण इसकी संस्कृति में विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं का समावेश देखने को मिलता है। इसके बावजूद इस समुदाय ने अपनी मूल सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा है। बंजारा संस्कृति की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी सामुदायिकता (ब्वउउनदपजंतपंदपेउ) है, जिसमें व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामूहिक जीवन, पारस्परिक सहयोग तथा परंपरागत सामाजिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। समुदाय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन पारंपरिक पंचायत, टांडा व्यवस्था तथा सामुदायिक नेतृत्व के माध्यम से होता है, जो सामाजिक नियंत्रण एवं सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमुख साधन हैं (ळीनतलमए 1963य ैपदही, 1992)।

बंजारा समुदाय की सांस्कृतिक पहचान उसकी भाषा, वेशभूषा, आभूषण, लोकगीत, लोकनृत्य तथा हस्तशिल्प में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इनकी मातृभाषा को सामान्यतः गोर बोली (ळवत ठवसप) अथवा लम्बाड़ी भाषा कहा जाता है, जो विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय भाषाओं के प्रभाव से विविध रूपों में विकसित हुई है। बंजारा महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा अत्यंत रंगीन एवं कलात्मक होती है, जिसमें हाथ से की गई कढ़ाई, शीशे का कार्य (डपततवत ॅवता), कौड़ियों, सिक्कों तथा रंगीन धागों का आकर्षक प्रयोग किया जाता है। चाँदी के भारी आभूषण, नथ, हँसली, बाजूबंद, पायल तथा कंगन उनकी सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख प्रतीक हैं। इसी प्रकार लम्बाड़ी

कढाई (स्ंउइंदप म्उइतवपकमतल) भारतीय लोककला की एक विशिष्ट विधा है, जिसे राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर हस्तशिल्प कला के रूप में पहचान प्राप्त है। बंजारा लोकगीत एवं लोकनृत्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे समुदाय के इतिहास, वीरगाथाओं, प्रेम, प्रकृति, कृषि, सामाजिक संबंधों तथा धार्मिक विश्वासों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित करने का प्रभावी माध्यम भी हैं (टपकलंतजीप – त्ंपए 1976य म्सूपदए 1964)।

धार्मिक एवं सामाजिक जीवन बंजारा संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। यह समुदाय मुख्यतः हिंदू धार्मिक परंपराओं से प्रभावित है, किन्तु इसके धार्मिक विश्वासों में प्रकृति–पूजा, पूर्वज–पूजा तथा लोकदेवताओं की आराधना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बंजारा समाज में सेवालाल महाराज को अत्यधिक श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है और उन्हें समुदाय के आध्यात्मिक मार्गदर्शक एवं सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसके अतिरिक्त देवी भवानी, मरियम्मा, तुलजा भवानी, खंडोबा तथा अन्य क्षेत्रीय देवताओं की पूजा भी व्यापक रूप से की जाती है। होली, दीपावली, दशहरा, तीज तथा सेवालाल जयंती जैसे पर्व सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं, जिनमें लोकगीत, नृत्य, सामूहिक भोज तथा धार्मिक अनुष्ठान सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। जन्म, विवाह एवं मृत्यु से संबंधित संस्कार भी परंपरागत रीति–रिवाजों के अनुसार संपन्न किए जाते हैं, जिनमें गोत्र व्यवस्था, सामुदायिक सहभागिता तथा लोकाचार का विशेष महत्व होता है (डंरनउकंत, 1961य त्नेमसस – भ्पतंसंस, 1916)।

वर्तमान समय में शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण तथा संचार क्रांति ने बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा एवं रोजगार के कारण शहरी जीवन शैली की ओर आकर्षित हो रही है, जिसके परिणाम स्वरुप पारंपरिक, भाषा, वेशभूषा, लोकगीत एवं लोक कलाओं का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता जा रहा है। दूसरी ओर सरकारी जनजातीय विकास योजनाओं, शिक्षा के विस्तार तथा सांस्कृतिक संरक्षण कार्यक्रमों ने समुदाय में सामाजिक जागरुकता और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ बंजारा समुदाय की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का भी संरक्षण किया जाए। लोकभाषा, लोक साहित्य, पारंपरिक कढ़ाई, लोक संगीत तथा सांस्कृतिक अनुष्ठानों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण, शोध एवं संरक्षण न केवल इस समुदाय की सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखेगा, बल्कि भारत की बहुलतावादी सांस्कृतिक विरासत को भी समृद्ध करेगा। अतः बंजारा जनजाति की संस्कृतिक परंपराएं केवल अतीत की धरोहर नहीं है बल्कि वे समकालीन सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक निरंतरता के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय भी है।

आधुनिकीकरण, सांस्कृतिक संरक्षण की चुनौतियां एवं सरकारी प्रयास :–

आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने बंजारा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। शिक्षा की प्रसार, रोजगार के नए अवसरों, शहरी प्रवास तथा बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के कारण समुदाय की पारंपरिक जीवन शैली, वेशभूषा, भाषा, लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक व्यवसाय एवं सामुदायिक संस्थानों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी आधुनिक जीवन शैली को अपनाने के कारण अपनी मातृभाषा, लोककला एवं सांस्कृतिक परंपराओं से धीरे–धीरे दूर होती जा रही है, जिससे सांस्कृतिक पहचान एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत ;प्दजंदहपइसम ब्नसजनतंस भ्मतपजंहमद्ध के संरक्षण की चुनौती उत्पन्न हुई है। इसके अतिरिक्त आर्थिक विषमता,

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का सीमित प्रसार, पारंपरिक हस्तशिल्पों के लिए घटता बाजार, लोककलाओं, का अपर्याप्त दस्तावेजीकरण तथा सांस्कृतिक पर्यटन से सीमित जुड़ाव जैसी समस्याएं भी इस समुदाय की सांस्कृतिक निरन्तरता को प्रभावित करती है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए अनेक संवैधानिक एवं संस्थागत प्रावधान किए गए हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 में राज्य को अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक एवं आर्थिक हितों की विशेष अभिवृद्धि का निर्देश दिया गया है, जबकि अनुच्छेद 244 तथा पंचम अनुसूची अनुसूचित क्षेत्र के प्रशासन एवं जनजातीय हितों के संरक्षण से संबंधित है। अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजातियों के अधिसूचनाकरण का संवैधानिक आधार प्रदान करता है इसके अतिरिक्त जनजातीय कार्य मंत्रालय (डपदपेजतल वि ज्तपइंस ।ापिते), प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (च्ड–श्र।छड।छ), एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (म्डै), राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम (छैज्थ्क्ब), वन धन विकास योजना, ट्राइफेड (ज्त्थ्म्क्) तथा विभिन्न छात्रवृत्ति एवं कौशल विकास योजना के माध्यम से जनजातीय समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ उनकी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही, यूनेस्को (न्छम्ैब्ब्) द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण सम्बन्धी सिद्धांत तथा भारतीय मानव शास्त्रीय सर्वेक्षण एवं जनजातीय अनुसंधान संस्थानों द्वारा किए जा रहे दस्तावेजीकरण कार्य की इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः यह आवश्यक है कि विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को सांस्कृतिक संरक्षण के साथ संतुलित किया जाए, ताकि बंजारा जनजाति की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, लोकज्ञान, पारंपरिक कलाएं एवं सामाजिक विरासत भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सकें।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बंजारा जनजाति भारत की उन विशिष्ट जनजातीय समुदायों में से है, जिसने ऐतिहासिक परिस्थितियों, सामाजिक परिवर्तनों तथा आर्थिक चुनौतियों के बावजूद अपनी सांस्कृतिक अस्मिता एवं सामुदायिक पहचान को उल्लेखनीय रूप से संरक्षित रखा है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह समुदाय केवल घुमंतू व्यापार एवं परिवहन का माध्यम नहीं था, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के मध्य आर्थिक एवं सांस्कृतिक संपर्क स्थापित करने वाला एक महत्वपूर्ण सामाजिक समूह भी था । इसकी विशिष्ट वेशभूषा, पारंपरिक कढ़ाई कला, लोकगीत, लोकनृत्य, धार्मिक आस्थाएं, सामुदायिक संगठन, टांडा व्यवस्था तथा लोकज्ञान भारतीय सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण घटक है, जो इसकी विशिष्ट पहचान को स्थापित करते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा संचार क्रांति ने बंजारा समाज की जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन किए हैं। इन परिवर्तनों ने जहां एक ओर शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसरों तथा सामाजिक सहभागिता में वृद्धि कर समुदाय की सशक्तिकरण को प्रोत्साहित किया है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक भाषा, लोककला, वेशभूषा, लोकसंगीत तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के समक्ष गंभीर चुनौतियां भी उत्पन्न की है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी में पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों से दूरी तथा आधुनिक जीवन शैली के प्रति बढ़ते आकर्षण के कारण अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

शोध से यह निष्कर्ष भी प्राप्त होता है कि भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों के संरक्षण एवं विकास के लिए किए गए संवैधानिक प्रावधान तथा भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं बंजारा समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। तथापि, इन योजनाओं की प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित होगी जब उनके साथ सांस्कृतिक संरक्षण की दीर्घकालिक रणनीति, स्थानीय समुदाय की सक्रीय भागीदारी तथा लोक भाषा, लोक साहित्य, पारंपरिक हस्तशिल्प एवं सांस्कृतिक अभिलेखीकरण (क्वबनउमदजंजपवद) को समान महत्व दिया जाए। जनजातीय विकास को केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रखकर संस्कृतिक सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से भी देखा जाना आवश्यक है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएं एवं जीवन शैली भारतीय बहुलतावादी संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। इनके संरक्षण के लिए शैक्षणिक अनुसंधान, सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण, संग्रहालयीकरण, डिजिटल अभिलेख निर्माण, लोक कलाओं के प्रोत्साहन, मातृभाषा संरक्षण तथा समुदाय आधारित विकास मॉडल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह अध्ययन न केवल बंजारा जनजाति की सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक है, बल्कि भारतीय जनजातीय इतिहास, सांस्कृतिक मानव शास्त्र एवं लोकसंस्कृति अध्ययन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। भविष्य में क्षेत्रीय तुलनात्मक अध्ययन, लैंगिक परिप्रेक्ष्य, युवा पीढ़ी की सांस्कृतिक चेतना तथा डिजिटल युग में जनजातीय संस्कृति के संरक्षण से संबंधित शोध इस विषय को और अधिक समृद्ध कर सकते हैं।

संदर्भ सूची (त्मिमितमदबमे) :–

1. Census of India. (2011). Primary Census Abstract for Scheduled Tribes. Office of the Registrar General & Census Commissioner, Government of India.
2. Elwin, V. (1943). The Aboriginals. Oxford University Press.
3. Elwin, V. (1964). The Tribal World of Verrier Elwin. Oxford University Press.
4. Ghurye, G. S. (1963). The Scheduled Tribes (3rd ed.). Popular Prakashan.
5. Government of India. (1950). The Constitution of India. Ministry of Law and Justice. (Articles 46, 244, 342 and Fifth Schedule).
6. Majumdar, D. N. (1961). Races and Cultures of India. Asia Publishing House.
7. Ministry of Tribal Affairs, Government of India. (2023). Annual Report 2022–23. New Delhi.
8. Ministry of Tribal Affairs, Government of India. (2023). Pradhan Mantri Janjati Adivasi Nyaya Maha Abhiyan (PM-JANMAN): Guidelines. New Delhi.
9. National Scheduled Tribes Finance and Development Corporation (NSTFDC). (2023).
10. Annual Report. New Delhi.
11. Russell, R. V., & Hiralal. (1916). The Tribes and Castes of the Central Provinces of India (Vols. I–IV). Macmillan & Co.
12. Singh, K. S. (Ed.). (1992–2004). People of India (National Series). Anthropological Survey of India, Oxford University Press.
13. Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India Ltd. (TRIFED). (2023).

ISSN: 3139-843X

14. Annual Report. New Delhi.
15. UNESCO. (2003). Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage. Paris: UNESCO.
16. Vidyarthi, L. P., & Rai, B. K. (1976). The Tribal Culture of India. Concept Publishing Company.
17. Xaxa, V. (2008). State, Society and Tribes: Issues in Post-Colonial India. Pearson Education.
18. Béteille, A. (1998). The Idea of Natural Inequality and Other Essays. Oxford University Press.
19. Bose, N. K. (1971). Tribal Life in India. National Book Trust.
20. Anthropological Survey of India. (1994–2004). People of India: National Series. Kolkata: Anthropological Survey of India.
21. Ministry of Tribal Affairs. (2021). Tribal Welfare Schemes and Programmes. Government of India.
22. Government of India. (2014). Van Dhan Vikas Yojana: Guidelines. Ministry of Tribal Affairs.
23. Sharma, B. D. (1995). Tribal Development: The Concept and the Process. Sahyog Pustak Kuteer.
24. Chaudhuri, B. (Ed.). (1990). Tribal Transformation in India (Vols. I–II). Inter-India Publications.
25. Sachchidananda. (1977). The Tribal Village in Bihar: A Study in Unity and Extension. Bookland Private Limited.